SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

श्रीराम सीड्स प्रा॰ लि॰

272, नई धान मंडी, श्रीगंगानगर - 335001(राज.)

जौं की फसल उत्पादन हेतु आवश्यक सुझाव

किस्में

- **प्रमाणित बीज** : BH-393, PL-426, RD-2035, RD-2052, DWRB-137
- **रिसर्च बीज** : गट्टू-SRB-101, जूडो-SRB-102

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

बुवाई का समय

जौ की बिजाई रबी मौसम में की जाती है। सिंचित क्षेत्रों में 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक बिजाई करना सबसे उपयुक्त रहता है, जबकि बारानी क्षेत्रों में 10 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक बिजाई कर लेनी चाहिए। यदि किसी कारण से बिजाई में देरी हो जाए तो नवम्बर के अंत तक बिजाई की जा सकती है

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

भूमि और उसकी तैयारी

जौ की खेती के लिए खेत को अच्छी तरह तैयार करना आवश्यक है। इसके लिए एक गहरी जुताई के बाद 2–3 हल्की जुताइयाँ देशी हल, कल्टीवेटर / रोटावेटर द्वारा करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें। अंतिम जुताई के समय खेत को समतल करें ताकि सिंचाई व जल निकास में कोई समस्या न हो। आवश्यकता अनुसार पलेवा देकर उचित नमी की स्थिति में बिजाई करें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

बीज दर

सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई के लिए 35–40 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ पर्याप्त होता है, जबकि बारानी क्षेत्रों में 40–45 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है। उचित बीज दर रखने से पौधों की संख्या संतुलित रहती है और फसल अच्छी बढ़वार करती है।

बुवाई का तरीका

अच्छी पैदावार लेने के लिए जौ का बीज बखेर कर न बोये, लाईन से लाईन का अन्तर 22 से.मी., पौधों में अन्तर 5 से. मी. रखते हुए सीड ड्रिल से बिजाई करें। यदि विलम्ब से बिजाई कर रहे हैं तो लाइनों के मध्य अन्तर घटा कर 18 सें. मी. रखें। जौ की बिजाई जीरो ड्रिल विधि द्वारा भी की जा सकती है। जीरो ड्रिल विधि द्वारा बिजाई के लिये खरपतवार नियन्त्रण हेतु बिजाई से पूर्व आधा लीटर/एकड़ ग्रमिक्सोन (PARA-QUAT) 200 लीटर पानी में खेत में छिड़ककर नियन्त्रित किया जा सकता है। जीरो टिलेज विधि अपना कर किसान पानी की बचत कर सकते हैं।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

सिंचाई प्रबंधन

- **कुल सिंचाई: 2–3**

अवस्था	समय
पहली	25–30 दिन (CRP अवस्था)
दूसरी	बालियाँ निकलते समय
तीसरी	दाना भराव (आवश्यक हो तो)

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

खरपतवार नियंत्रण

बाथु बथुआ, खरबथुआ, पालक घास, पीत पापड़ा आदि को चौड़ी पत्ति वाले खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु मैटसल्फयुरान मिथाईल (एलग्रिप 8 ग्राम 20 D.P.) + 200 ML SURFACTANT या एफीनिटि 40 D.F. 20 ग्राम को 200 लीटर पानी में मिला कर 35 दिन बाद सिंचाई करके छिड़कें। दोनों तरह के खरपतवार हों तो।
ATLANTIS 3% METSULPHURAN METHYLE 160 GM/ACRE का प्रयोग करें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

खाद एवं उर्वरक

सिंचित क्षेत्रों में जौ की अच्छी पैदावार के लिए नाइट्रोजन (यूरिया 50 किलो), P2O, 12 KG (75 KG S.S.P.), K2O 6 KG (10 किलो म्यूरिट ऑफ पोटाश) उर्वरक की मात्रा दें। फासफोरस, पोटाश और जिंक को खेत की तैयारी करते समय भूमि में मिला दें और यूरिया पहली सिंचाई पर दें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

जौ फसल के प्रमुख कीट एवं नियंत्रण उपाय

जौ की फसल में पीला रतुआ, भूरा रतुआ तथा पत्ती झुलसा जैसे रोगों का प्रकोप हो सकता है। इन रोगों के नियंत्रण के लिए प्रोपिकोनाज़ोल 200 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करना लाभकारी होता है। कीटों में मुख्य रूप से माहू का प्रकोप देखा जाता है, जिसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 40 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

जौ फसल – रोग नियंत्रण सारणी

रोग	लक्षण	नियंत्रण
पीला रतुआ	पीली धारियाँ	मैन्कोज़ेब 2g/L
पत्ती धब्बा	भूरे धब्बे	प्रोपिकोनाजोल

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

रोग नियंत्रण

सफेद रतुआ एवं रोएदार फफूंदी के प्रभावी नियंत्रण के लिए मेटलैक्सिल एम 4% या मॅन्कोजेब 64% डब्ल्यू.पी. या रिडोमिल गोल्ड 1-2 ML प्रति 1 लीटर पानी प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करें। तना गलन के लिए फसल चक्र अपनायें तथा कार्बेन्डेजिम 50% डब्ल्यू. पी. या बाविस्टीन 2 ग्रा. को प्रति 1 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिडकाव करें।

सरसों में मरगोजा (Orobanchaceae) नामक खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए गहरी जुताई, फसल चक्रण (चना/जौ लगाएं), नमी प्रबंधन (अधिक नमी से मरता है), और रासायनिक नियंत्रण (बुवाई के 25-30 दिन बाद ग्लाइफोसेट 25-30ml/acre) जैसे तरीके अपनाएं; सही समय पर दवा का छिड़काव करें और खेत में नमी बनाए रखें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

टिप्पणी

इस पत्रक में दी गई फसल उत्पादन संबंधी सिफारिशें कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विशेषज्ञों, प्रगतिशील किसानों एवं सरकारी कृषि विशेषज्ञों के शोध एवं अनुभवों पर आधारित हैं। फसल अथवा किस्म का उत्पादन केवल बीज पर निर्भर नहीं करता, बल्कि भूमि की स्थिति, खाद-उर्वरक, सिंचाई, मौसम एवं अन्य कृषि कारकों पर भी निर्भर करता है। विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों में परिणाम भिन्न हो सकते हैं। अतः कृषक स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संबंधित कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों अथवा कृषि विशेषज्ञों की सलाह एवं स्वयं के अनुभव के आधार पर ही खेती संबंधी निर्णय लें।